Few Pictures of the Activity and Media Coverage 2025

आंबेडकर ने कृषि विकास, बैंकिंग व चकबंदी में विशेष कार्य किया : प्रो. श्याम बिहारी

बरेली(एसएनबी)। रोहिलखंड विवि के प्राचीन इतिहास और संस्कृति विभागाध्यक्ष एवं विधायक प्रो (डॉ) श्याम बिहारी लाल ने भीमराव आंबेडकर जयंती की पूर्व संध्या पर आयोजित संगोष्ठी में मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए कहा कि डॉ. आंबेडकर द्वारा कृषि विकास, बैंकिंग,

> आंबेडकर जयंती की पूर्व संध्या पर संगोष्ठी आयोजित

ट्रेजरी चकबंदी आदि क्षेत्रों में विशेष कार्य किया।

बैंकिंग के क्षेत्र में जहां उन्होंने रुपया से संबंधित समस्याओं के समाधान को कृषि व्यवस्था के माध्यम से सुधारने की क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया। उन्होंने स्वतंत्रता, समानता और विश्वबन्धुत्व के संदेश को भी देश में फैलाया। असमानता, अस्पृश्यता, ज्योति विभिन्नता में सुधार के लिए केवल आंदोलन चलाने और विभिन्न कानून बनाने में भी अपना बहुमूल्य योगदान दिया। इस अवसर पर कुलपति प्रोफेसर केपी सिंह, डॉ ज्योति पांडे, डॉ आभा, डॉ कामिनी, डॉ प्रिया, डॉरामकेवल, डॉ एस एस करुणा, डॉ विशाल सक्सेना, प्रोफेसर सलीम, डॉ इंद्रप्रीत कौर ने भी विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम में तपन वर्मा, सुधाकर मौर्या, मो.फैज, दीपांशु, अनुष्का, महक का सहयोग रहा।

विधायक प्रो. श्याम बिहारी लाल विवि में डॉ. आंबेडकर जयंती की पूर्व संध्या पर आयोजित संगोष्ठी को संबोधित करते हुए, साथ में मंचासीन कुलपति प्रो. केपी सिंह। फोटो : एसएनबी

डॉ. अम्बेडकर चेयर

विदेश में शिक्षा ग्रहण करने का हमेशा अवसर

कार्यशाला में कुलपति प्रो. केपी सिंह का स्वागत करते शिक्षक। ● अमृत विचार

कार्यालय संवाददाता, बरेली

अमृत विचार: रुहेलखंड विश्वविद्यालय एवं सोशल स्टडी फाउंडेशन पुणे के संयुक्त तत्वाधान में शिक्षा विभाग संकाय सभागार में सोमवार को कार्यशाला हुई। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. केपी सिंह ने कहा कि अनुसूचित जाति के छात्र-छात्राओं को विदेश में शिक्षा ग्रहण करने का अवसर हमेशा ही है लेकिन उचित मार्गदर्शन न होने के कारण छात्र-छात्राएं लाभ से वंचित रहते हैं।

मुझे खुशी है कि सोशल स्टडी फाउंडेशन की ओर से विश्वविद्यालय में रजिस्ट्रेशन काफी दिनों से चल रहा था। सोशल स्टडी फाउंडेशन पुणे एवं रॉयल कैंसर विद्यालय के संयुक्त प्रावधान में

● अनुसूचित जाति के छात्र-छात्राओं के लिए छात्रवृत्ति की कार्यशाला में बोले कुलपति

कार्यक्रम आयोजित हुआ। यह कार्यक्रम विदेश में बच्चों को विशेष अवसर प्रदान करेगा। हमारे विश्वविद्यालय से गत वर्षों में 401 छात्र-छात्राओं ने विदेश में शिक्षा ग्रहण करने का लाभ लिया है।

डॉ. शशि बाला, डॉ. रवि कुमार ने भी विचार रखे। विशिष्ट अतिथि हरि सोवानी रहे। संयोजन डॉ. रविंद्र कुमार ने और संचालन डॉ. विमल कुमार ने किया। आकाश पुष्कर ने आभार और रामप्रसाद अग्रवाल ने धन्यवाद दिया। डॉ. सुषमा गोंडियाल, डॉ. रामबाबू सिंह, डॉ. सुरेश कुमार, डॉ. एसके वर्मा, डॉ. आलोक श्रीवास्तव, डॉ. एसएस बेदी उपस्थित रहे।

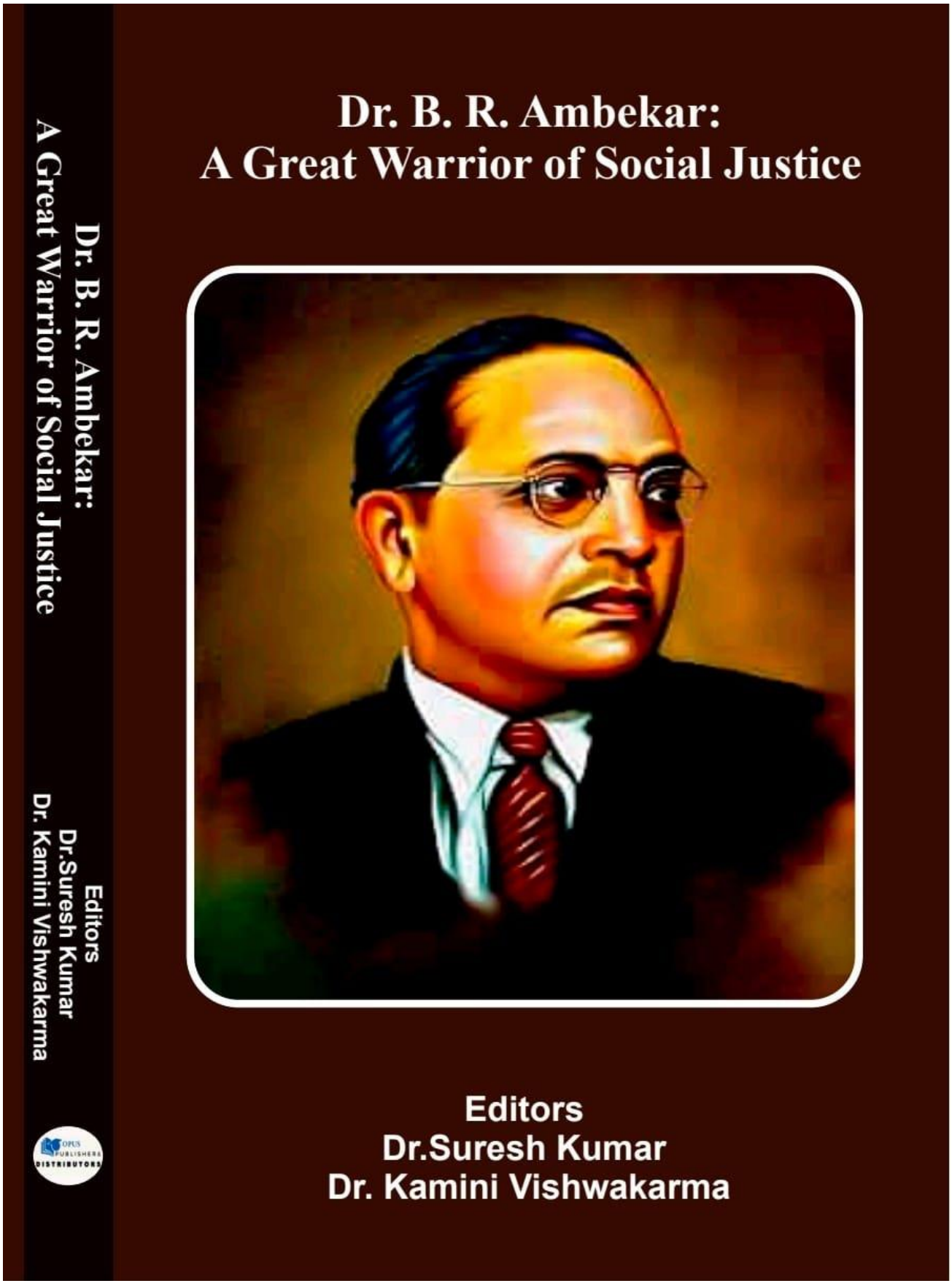

Published Book

भारतीय ज्ञान परंपरा में डॉ0 अंबेडकर व ज्योतिबा फुले के मूल्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ0 सुरेश कुमार

सहायक आचार्य व समन्वयक, महात्मा ज्योतिबा फुले शोध पीठ, महात्मा ज्योतिबा रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली

सारांश

भारतीय समाज में हजारों वर्षों से चली आ रही भारतीय ज्ञान परंपरा एक ऐसी समृद्ध विरासत है जिसमें मानवीय मूल्यों व नैतिकता का पालन करते हुए मानव जीवन को सरल और सुखद बनाने के लिए ज्ञान, विज्ञान, लौकिक और पारलौकिक कर्म, धर्म और त्याग का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। भारतीय ज्ञान परंपरा को समृद्ध करने में जहां एक ओर प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत के रूप में विभिन्न धार्मिक ग्रंथ (वेद, पुराण, उपनिषद, अरण्यक, ऐतिहासिक महाकाव्य के रूप में रामायण व महाभारत आदि) है वहीं दूसरी ओर विभिन्न महापुरुषों जैसे महात्मा गांधी, रविन्द्र नाथ टैगोर, स्वामी विवेकानन्द, राजाराम मोहन राय आदि द्वारा प्रदत्त मूल्य हैं जिनके द्वारा मनुष्य का सर्वांगीण विकास होता है। इन महापुरुषों में डॉ0 अंबेडकर व ज्योतिबा फुले भी रहे हैं जो समाज में सामाजिक न्याय के साथ–साथ मानवीय मूल्यों के जीवंत उदाहरण हैं। इन महापुरूषों के विचार व मूल्यों पर आधारित शिक्षा व्यवस्था आज भी संसार में सभी व्यक्तियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी हुई है। उनके चिंतन व मूल्यों में स्वतंत्रता, समानता, बन्धुता व सामाजिक न्याय के दर्शन होते हैं। भारतीय समाज को संवैधानिक मूल्यों व राष्ट्रीय एकता के सूत्र में बांधने वाले डॉ0 अंबेडकर का चिंतन अविस्मरणीय रहा है, वही महात्मा ज्योतिबा फुले जो डॉ0 अंबेडकर के बुद्ध व कबीर के बाद तृतीय गुरू थे जिन्होंने शिक्षा व सामाजिक सुधारो के माध्यम से मानवीय मूल्यों व मानव अधिकारों की लड़ाई लड़ने वाले प्रकाश स्तंभ के रूप में देखे जा रहे हैं। 19वीं शताब्दी के इन महापुरुषों में महात्मा ज्योतिबा फुले व डॉ0 अंबेडकर गुरु–शिष्य परंपरा के अद्भुत मूल्य व उदाहरण हैं जिनकी प्रेरणा से भारतीय समाज का उद्धार हुआ है तथा भारतीय ज्ञान परंपरा में उनके द्वारा दिये गये विभिन्न मूल्यों के माध्यम से समाज का पथ प्रदर्शन हो रहा है।

संकेत शब्द :– *ज्ञान, परम्परा, मूल्य, सामाजिक समानता व सामाजिक न्याय।*

प्रस्तावना :–

प्राचीन भारत के इतिहास के अध्ययन से आश्चर्यजनक तथ्यों की प्राप्ति होती है। यह भारत के इतिहास का एक ऐसा संक्रान्ति काल था जहाँ एक ओर सदियों से चली आ रही भारतीय ज्ञान परंपरा में भारतीय समाज को एक नई दिशा मिल रही है, वहीं दूसरी ओर भारतीय समाज में कुछ ऐसी विसंगतियाँ थी जिनके कारण भारतीय समाज पूरी तरह धार्मिक अन्धविश्वास की जाल में जकड़ा हुआ था। 19वीं सदी के भारतीय समाज में बाल विवाह, सती प्रथा व विधवा पुनर्विवाह न होना जैसी कुप्रथाओं का प्रचलन समाज में पूर्णरूप से व्याप्त था। जनमानस पर पुजारियों, धर्माचार्यो व समाज के सबसे कुलीन वर्ग का वर्चस्व प्रभावी था। उस समय सामाजिक स्थिति इतनी दयनीय थी कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति को मानवीय अधिकार प्राप्त नहीं थे। सबसे ज्यादा दयनीय स्थिति नारी की थी जिसे शिक्षा ग्रहण करने का अधिकार ही प्राप्त नहीं था। यद्यपि कि भारतीय ज्ञान परम्परा से पुष्पित विभिन्न समाज सुधारकों जैसे राजा राम मोहन राय, हरविलाश सारदा, ईश्वरचन्द्र, विद्या सागर आदि ने भारतीय नारी की दशा में सुधार हेतु कार्य किये परन्तु अपेक्षित सुधार नहीं हो पाया। इन्हीं महापुरूषों में 19 वीं शताब्दी के महान समाज सुधारक डॉ0 भीमराव अम्बेडकर व महात्मा ज्योतिबा फुले थे जिन्होंने अपने व्यक्तित्व व कृतित्व से भारतीय ज्ञान परम्परा में ऐसे मूल्यों की रचना की जो सामाजिक न्याय पर आधारित है। इन महापुरूषों ने भारतीय समाज को ऐसी चिन्तन दृष्टि दी है जिससे समाज में स्वतंत्रता, समानता व बन्धुता का विकास हो सके।

प्रकाशित शोध पत्र

Dr. Suresh kumar
Founder Member & Co-ordinatior
Ambedkar chair.